International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, May 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

तुलसीदास का समन्वयवाद

[1]Anu sharma, [2]Dr. Mukesh Kumar
1 Research Scholar of OPJS University, Churu, Rajasthan
2Associate Professor, OPJS University, Churu, Rajasthan

प्रस्तावना- हिन्दू धर्म के अवतार के रूप मेंतुलसीदास जी ने मानव-जाति का पतन होने से बचाया। यह बात दखे कर 'गीता' के इस भलोक की ओर ध्यान अनायास ही स्वयं चला जाता है-

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति
भारत अभ्युत्थानमधर्मस्य,
तदात्मानम् सृजामयहम्।
परित्राणाय साधूनां विना''ाय
च दुश्कृताम् धर्मसंस्थापनार्थाय,
सम्भवामि युगे- युगे।।

अर्थात् जब-जब धर्म की हानि होती है, तब-तब धर्म के अभ्युत्थान के लिए, साधुओं की रक्षा के लिए तथा दुश्टात्माओं के विना''ा के लिए मैं अवतार लिया करता हूं। भारत-भूमि कर्म-भूमि है, जब-जब इस पर अत्याचार और अनाचार हुआ, तब-तब समयानकूल किसी न किसी युगपुरूश, सन्त अथवा महात्मा का अवतार होता रहा है।

तुलसी जैसा श्रेश्ठ -व्यक्तित्व सम्पन्न पुरूश मध्य युग में कदाचित् ही कोई मिलेगा। तुलसीदास ने अपने गहन ज्ञान और व्यक्तित्व के अनुरूप समन्वय किया। उन्होनें लोक और भाास्त्र का ही नहीं, वैराग्य और गार्हस्थ का, भक्ति और ज्ञान का, भाशा और संस्कृति का, निर्गुण और सगुण का, पुराण और काव्य का, पण्डित और अज्ञानी का, ब्राह्मण और चाण्डाल का, आद''ा और व्यवहार का, प्रवृत्रि का एवं ऊँच और नीच का अपूर्व समन्वय किया। तुलसी ने सामाजिक, पारिवारिक, आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनीतिक आदि सभी क्षेत्रां को अपनाया और इन सभी क्षेत्रों में समन्वय स्थापित करके सामाजिक विशमता को दूर किया। सत्य तो यह है कि भक्त, दा''ानिक, पण्डित, कवि, नीतिज्ञ, समाज-सुधारक और विचारक के रूप में तुलसी का महान व्यक्तित्व सम्पूर्ण वैचारिक धरातल पर छाया हुआ है।

तुलसी ने अपने समन्वयवादी दृश्टिकोण के कारण लोकनायक हैं। डा0 हजारीप्रसाद द्विवेदी ने तो बुद्धदेव के प''चात् तुलसी को ही लोकनायक घोशित किया है। इसके साथ-साथ यह भी समझ लेना आव''यक है कि लोकनायकत्व और समन्वयवाद एक दूसरे के पूरक हैं। एक के बिना दसूरा अधूरा है और दूसरे के बिना पहला अधूरा है। कहने का आ''ाय यह है कि लोकनायक ही समन्वयवादी हो सकता है और समन्वयवादी ही लोकनायक होता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, Month 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

"तुलसीदासजी समन्वयवादी के साथ-साथ मर्यादावादी भी थे। समन्वय के आवे''ा में उन्होनें कही भी धर्म के असत् रूप और लोक धर्म की विरोधी प्रवृत्रियों से समझौता नहीं किया। लोक मर्यादा का उल्लघंन, चाहे वह किसी भी रूप में हो, उनके लिए असह्य था। उनके मतानुसार मर्यादा के बिना अपने सामाजिक कल्याण आका''ा-कुसुम के समान है। अपने इस मर्यादावाद से तुलसीदास किसी के सुख को बलात् चोट नहीं पहुचाना चाहते हैं। उनका मर्यादावाद तो जन-कल्याण के निमि>ा था।"

तुलसी की समन्वयवादी विचारधारा का सक्षिप्त विवेचन

(1) मानवतावादी विचारधारा- लोकनायक तुलसीदास के साहित्य का अध्ययन करने के प''चात् यही कहा जा सकता है कि उन्होनें मानव की समस्त बातां को अपने काव्य में समन्वय कर दिया है। कहने का अभिप्राय यह है कि उनका साहित्य 'सत्यं ि"वं और सुन्दरम्' की सफल अभिव्यक्ति है। तुलसीदास ने अपने समय की समस्त द''ाओं का बड़ा गहन अध्ययन करके अपने साहित्य के माध्यम से समाधान प्रस्तुत किये। कवित्व की दृष्टि से तुलसी की प्रांजलता, माधुर्य और ओज, अनुपम कथा, मानव-जीवन का सर्वांग निरूपण अप्रतिम हुआ है। मर्यादा ओर संयम की साधना में गोस्वामीजी संसार के सर्वश्रेश्ठ कवि हैं। 'रामचरितमानस' में मर्यादावाद की जैसी सुन्दर पुष्टि गुरू की अवहेलना के लिए ि"ाश्य को दण्डित कराने हेतु की है, राम-राज्य का वर्णन करके जो उदा>ा आद''ा रखा है, उनमं और ऐसे ही अनके प्रसंगों में गोस्वामी जी की मानव-समाज के प्रति हित-कामना स्पश्टतः झलकती दखे ी जाती है। उनके अमर-काव्य 'रामचरितमानस' में मानवता के चिरन्तन आद''ा भरे पड़े हैं।

(2) धार्मिक क्षेत्र मे समन्वय - तुलसी के''ाव की तरह केवल मात्र कवि ही नहीं थे, उन्हें मानव-जीवन की सभी द''ाओं का ज्ञान था। वे मानवतावादी कवि थे। धर्म मानव-जीवन की एक अमूल्य-वस्तु है। तुलसीदास ने सबसे पहले धार्मिक सम्प्रदायों में समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया-

(क) भौव और वैश्णवों का समन्वय-ि"ाव को अपना सर्वस्व मानने वाले ''ौव' कहलाते हैं और विश्णु को अपना सर्वस्व मानने वाले भक्त 'वैश्णव' कहलाते हैं। कुछ समय प''चात् वैश्णव-भक्त भौवो ं को तुच्छ एवं हेय दृष्टि से दखेने लगे और ि"ाव-भक्त वैश्णवों से घृणा करने लगे। तुलसी के समय में यह विद्वशे अपनी चरम-सीमा पर पहुँचा हुआ था, अतः तुलसी ने दोनो मतों में सामन्जस्य स्थापित करने के लिए एक ओर तो ि"ाव के मुँह से- सोई मम इश्टदेव रघुवीरा। सेवत जाहि सदा मुनि धीरा।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, Month 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

(ख) वैश्णव और भाक्तों का समन्वय- भौव और वैश्णवों में जिस प्रकार वैमनस्य और द्वेश की भावना फैली हुई थी, उसी प्रकार वैश्णव और भाक्तों में भी परस्पर संघर्श रहता था। तुलसीदास ने अपने काव्य 'रामचरितमानस' में 'ब्रह्म' को राम की भाक्ति बताकर तथा 'उद्भवस्थिति संहारकारिणी, क्लेाहारिणी, सवश्रेयस्कारी' आदि कहकर उनकी वन्दना की। सीता के द्वारा भाक्तिरूपिणी पार्वती को स्तुति करायी-

नहिं तब आदि मध्य अवसाना। अमित प्रभाव बेद नहिं जाना।।

भव-भव विभव पराभव कारिनी। वि"व विमोहिनी स्वबस बिहारिनी।।

(ग) राम सम्प्रदाय और पुश्टि-मार्ग का समन्वय- तुलसीदास ने अपनी अलौकिक काव्य प्रतिभा से इन दोनों सम्प्रदायों का बड़े ही सुन्दर ढग से समन्वय किया है। सर्वप्रथम 'राम सम्प्रदाय' को समझने का प्रयास कीजिए। इसमें 'राम' को ही परब्रह्म माना गया है। 'पुश्टि-मार्ग' म ब्रह्म की कृपा अथवा अनुग्रह को ही सर्वोपरि बताया है। इस बात को गोस्वामी तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' में कहा है- राम भगति मनि उरबस जाके दुःख लवलसे न सपनहुंताके ।।

चतुर सिरोमनि तेई जग माहीं। जे मनि लागि सुजतन कराहीं।। सो मनि जदपि प्रकट जग अहई। राम कृपा बिनु नहिं कोउ लहई।।

(3) दा"र्निक विचारों में समन्वय -इसको हम अद्वैतवाद एवं वि"िश्टाद्वैतवाद का समन्वय भी कह सकते हैं। तुलसीदास के विचारों में अद्वैतवाद और वि"िश्टाद्वैतवाद का समन्वय मिलता है-

कोउ कह सत्य झूठ कह कोऊ, जुगल प्रबल करि मानै।
तुलसीदास परिहरै तीनि भ्रम, सौ आपुन पहिचानै ।

इसके द्वारा तुलसी ने दा"र्निक विद्वेश एवं वैमनस्य को दूर किया। डॉ0 द्वारिकाप्रसाद सक्सेना ने लिखा है- "यद्यपि गोस्वामी जी रामानुजाचार्च के मतानुयायी होने के कारण वि"िश्टाद्वैतवाद को मानते थे और इसी कारण आपने जीव को ई"वर का अं"ा कहकर ई"वर की ही भाँति चते न अमल, अविना"ी आदि कहा है। ब्रह्म को सगुंण, निर्गुण, अगुण, अरूप, अलख, अज, अनादि, इत्यादि कहकर वि"िश्टता प्रदान की है तथा 'पल्लवत फूल नवल नित संसार विटप नमामहे' तथा 'जो जग मृशा ताप -त्रय,..... कहहु केहि लेखे' आदि कहकर वि"िश्टाद्वैतवादियो ं की भाँति संसार को नित्य, भा"वत एवं अविना"ी घोशित किया है, परन्तु 'विनय-पत्रिका' में आकर तुलसी ने भांकर के अनुसार ही ब्रह्म को अज, स्वतन्त्र, सत्य आदि कहा है। जीव एवं जगत् को सोपाधिक एवं मिथ्या

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, Month 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बताया है तथा माया का विवेचन भी भांकर की ही भाँति किया है। इस तरह तुलसी के विचारों में अद्वैतवाद और विशिष्टाद्वैतवाद का भी समन्वय प्राप्त होता है और इसके द्वारा तुलसी ने दार्शनिक विद्वेश एवं वैमनस्य को दूर किया।''

(4) सगुण एवं निर्गुण का समन्वय - तुलसी से पूर्व ही भक्ति के क्षेत्र में ब्रह्म के निर्गुण और सगुण रूपों की उपासना का संघर्श चला आ रहा था। सूर ने जहाँ निर्गुण का खण्डन तथा सगुण का मण्डन किया, वहाँ तुलसी ने इनका पूर्व समन्वय किया। तुलसी ने लिखा है-

सगुनहिं अगुनहिं नहि कछु भेदा। बारि
बीचि जिमि गावहिं वेदा। अमलू अरूप
अलख अज कोई। भगत प्रेम-बस सगुन
सो होई।।

अमल अनवद्य अद्वैत निर्गुण सगुण ब्रह्म सुमिरामि नरभपू रूप।।

ऐसा कहकर स्तुति की है। इस तरह तुलसी ने निर्गुण एवं सगुण के विवाद को दूर करके दोनों में समन्वय स्थापित किया।

(5) सामाजिक क्षेत्र मं समन्वय - तुलसीदास का सामाजिक जीवन का समन्वय सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। यह काम उन्होनें नहीं किया होता तो 'राम' दशरथ के पुत्र राम ही बनेरहते, वे अन्तर्यामी 'राम नहीं हो पाते प्रो0 फूलचन्द जैन 'सारगं' ने 'हिन्दी और उसके कलाकार' नामक पुस्तक में लिखा है कि, '' सामाजिक समन्वय के रूप में तुलसी ने राम-राज्य का आदर्श उपस्थित कर आदर्श जन-समाज का संगठन किया और उसमें लोक-धर्म की व्यवस्था की। राम, सीता, लक्ष्मण, भक्त हनुमान- जैसे महान् चरित्रों की अवतारणा कर तुलसी ने हिन्दू जाति को समाजशास्त्र, लोकशास्त्र और चरित्र समबन्धी नये आदर्श दिये। उन्होनें आदर्श पति, आदर्श पत्नी, आदर्श भाई और आदर्श सेवक के उज्जवल चित्र देखकर जन-जीवन को उच्च बनाने की स्फूर्तिदायक प्रेरणा दी है। हिन्दू समाज के हित के लिए तुलसी वर्ण-व्यवस्था को आवश्यक समझते थे। उनका कहना था-

बरनाश्रम निज-निज धरम, निरत वेद-पथ लोग। चलहिं सदा पावहिं सुखहिं, नहिं भव
भोक न रोग।।

इस प्रकार तुलसीदास समाज-हित की दृष्टि से छोटी- बड़ी श्रेणियो ं का विधान अनिवार्य समझते थे। वे चाहते थे कि सब श्रेणियो के लोग अपनी-अपनी मर्यादा के भीतर ही प्रगति करें । सामाजिक जीवन का सुन्दर सामंजस्य और सभी श्रेणी के लोगों का पारस्परिक प्रेमपूर्ण व्यवहार ही सुख और

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, Month 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

समृद्धि का कारण बन सकता है, अन्यथा समाज में उच्छृंखलता बढ़ेगी, सामाजिक मर्यादा नष्ट हो जायेगी और सामाजिक जीवन का ढाँचा टूट जायेगा।

(6) ज्ञान, कर्म और भक्ति का समन्वय- डॉ0 द्वारिका प्रसाद सक्सेना ने लिखा है- ''तुलसी के समय में ज्ञानियों एवं भक्तों में बड़ा वाद-विवाद चलता था, जिसके फलस्वरूप ज्ञानीजन भक्तों को तुच्छ समझाकर स्वयं को श्रेष्ठ मानते थे। ज्ञान की श्रेष्ठता की ओर 'कहहिं सब वेद पुराना, नहिं कछु दुर्लभ ज्ञान समाना' कहकर तुलसी ने भी संकेत किया है, परन्तु तुलसी ने भक्ति के लिए ज्ञान की महत्ता घोषित की है। यद्यपि तुलसी ने 'ग्यान अगम प्रत्युह अनेका' अथवा 'ज्ञान के पंथ कृपान कै धारा'' आदि कहकर ज्ञान- मार्ग की कठिनाईयों की ओर संकेत किया है और 'भक्ति सुतन्त्र सुफल सुख खानी' कहकर भक्ति को ज्ञान की अपेक्षा कही श्रेष्ठ सिद्ध किया है, तथापि तुलसी ने 'भगतिहिं-ग्यानहिं नहिं कछु भेदा, उभय हरहिं भव संभव खेदा।।' कहकर दोनों में समता सिद्ध की हैं साथ ही 'जागे अगिनी करि प्रकट तब कर्म सुभासुभ लाई, वृद्धि सिरावै ज्ञान घृत ममता मल जरि जाई।' कहकर उन्होनें ज्ञान को घृत बताया है, जिसके द्वारा चित्र रूपी दीपक प्रज्वलित होता है और मोह-मायादि भालभ सब नष्ट हो जाते हैं। इसके साथ ही 'भगति भगवंत के संजतु ग्यान विराग' कहकर भक्ति को ज्ञान एवं वैराग्य से युक्त बताया गया है तथा 'श्रुति सम्मत हरि-भगति पथ संजुत विरति विवेक' कहकर भी भक्ति और ज्ञान के समन्वय की ओर संकेत किया गया है।

(7) राजनैतिक क्षेत्र मं समन्वय - समन्वयवादी तुलसी ने जीवन के किसी भी क्षेत्र में बिना समन्वय किये छोड़ा ही नहीं है। जैसा कि डा0 द्वारिका प्रसाद सक्सेना ने 'समन्वय भावना वाले लखे ा मे लिखा है कि, ''तुलसी एक उच्च कोटि के समन्वयवादी कवि थे। उन्होनें जीवन और जगत के सभी क्षेत्रा में समन्वय करने का स्तुत्य प्रयत्न किया है।''

तुलसी के काल मे राजा और प्रजा के बीच गहरी खाई बनती जा रही थी। राजा प्रजा से कहीं अधिक श्रेष्ठ, उन्नत एवं महान समझा जाता था, और ई''वर का रूप माना जाता था। इस भावना का परिणाम यह हुआ कि 'दिल्ली''वरो वा जगदी''वरो वा' कहकर दिल्ली''वर की प्र''ंसा की गयी। तुलसी ने 'रामचरितमानस' में राजा और प्रजा के कर्>व्यों का निर्धारण करते हुए दोनां के सम्यक रूप की व्यवस्था

की, और बताया कि 'सेवक कर, पद, नयन से मुख साहिब सो होई' अर्थात राजा को मुख के समान और प्रजा को कर, पद एवं नेत्रों के समान राजा का हितैशी होना चाहिए। इतना ही नहीं-

मुखिया मुख सो चाहिये,
खान-पान कहुँ एक। पालई

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, Month 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पोशई सकल अंग, तुलसी
सहित विवेक।।

कहकर तुलसीदास ने राजा को मुख के तुल्य बताते हुए अपनी प्रजा के पालन-पोशण के लिए ही वस्तुओं का संग्रह करने वाला कहा है। इस प्रकार भारीर मे जिस प्रकार मुख तथा अन्य अंगों का समन्वय रहता है उसी प्रकार से राजा और प्रजा के समन्वय पर बल दिया है।

(8) नर एवं नारायण का समन्वय- तुलसीदास ने 'भए प्रकट कृपाला दीनदयाला कौसिल्या हितकारी' कहकर उन्हीं ब्रह्म को कौ''ाल्या-पुत्र अथवा द''ारथ-सुत के रूप में अवतरित दिखाकर अपने इश्टदेव को साधारण मानव या नर से ऊपर उठाते हुए नारायण के ब्रह्म पद पर आसीन कर दिया है। इस प्रकार तुलसी ने राम के रूप में नर और नारायण का अथवा मानव और ब्रह्म का सुन्दर समन्वय किया है। एक उदाहरण देखिये-

बिनु पद चलै सुनै बिनु काना। कर बिनु
करम करै विधि नाना।। जेहि इमि
गावहिं वेद बुध, जाहिं धरहिं मुनि
ध्यान।।

सोई द''ारथ सुत भगत हित, कोसलपति भगवान।।

(1) पारिवारिक क्षेत्र में समन्वय- "तुलसी ने धर्म और समाज के क्षेत्र में ही सामन्जस्य स्थापित नहीं किया है, अपितु पारिवारिक क्षेत्र के अन्तर्गत पिता और पुत्र में, पति और पत्नी में सास और पुत्र-वधू में, भाई-भाई मे स्वांमी और अनुचर में तथा पति-सपत्नी मं भी सम्बन्ध स्थापित किया है। तुलसी ने पारिवारिक जीवन में समन्वय स्थापित करने हेतु एक आद''ार्ा परिवार की प्रतिश्ठा की है।"

(10) भाग्य और पुरूशार्थ में समन्वय - तुलसीदास एक महान कलाकार थे। उन्होनें भाग्यवाद और पुरूशार्थवाद में समन्वय स्थापित किया। पुरूशार्थवाद के विशय में उनका स्पश्ट विचार है- करम प्रधान वि''व करि राखा। जो जस करई सो तस फलु चाखा।।

भाग्यवाद के विशय में तुलसीदास का विचार है- तुलसी जसि
भवितव्यता तैसी मिले सहाई। इनके समन्वयवाद का रूप यह है
सुभ अरू असुभ करम अनुहारी। ईस दइे फल हृदय विचारी।।
करई जो करमु पाव फल सोई। निगम नीति असि कह सब कोई।।

(11) साहित्यक क्षेत्र में समन्वय- गोस्वामी तुलसीदास ने जीवन के क्षेत्र में समन्वय स्थापित किया है। मानव जीवन का कोई ऐसा अंग अछूता नहींरहा, जिस पर उन्होनें विचार नहीं किया हो। इसी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, Month 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रकार उन्होंने अपनी लेखनी के चमत्कार के लिए साहित्यिक क्षेत्र में भी समन्वय किया है, जिसका रूप निम्न प्रकार है–

(क) भाव में समन्वय –तुलसीदास भावों के सम्राट थे। उन्होनें अपने साहित्य के माध्यम से मानव–जीवन के सभी भावों का अंकन करके साहित्य में भाव–जगत् मेसमन्वय स्थापित किया है। उनका समस्त काव्य दिव्य रस से सँजोया हुआ है। अपनी रचनाओं में उन्होनें सभी रसों का विधान किया है। वे स्वयं कहते हैं– रामचरित जे सुनत अघाहीं। रस वि"ोश जाना तिन्हि नाहीं।

(ख) भाशा में समन्वय– गोस्वामी तुलसीदास ने साहित्यिक समन्वय स्थापित करने के लिए तत्कालीन समय में प्रचलित ब्रज और अवधी–दोनां भाशाओ में अपने काव्य का सृजन किया। हिन्दी के साथ–साथ संस्कृत भाशा के भलोकों की रचना करके तथा 'मानस' और 'विनय–पत्रिका' के भलोकों में संस्कृत–गर्भित हिन्दी का प्रयोग करके तुलसी ने संस्कृत और हिन्दी का सुन्दर समन्वय किया है।

(ग) रचना भौली में समन्वय – तुलसीदास जी ने जहाँ भाशा में समन्वय किया है, वहीं भौली में समन्वय करना भी आव"यक था। अतः तुलसीदास ने ''लम्बी–लम्बी समासान्त पदावली युक्त क्लिश्ट रचनाभौली तथा सरल एवं सुबोध भौली को अपनाते हुए 'विनय–पत्रिका' मे भौलीगत समन्वय को भी अपनाया है और 'मानस' मेविवरणात्मक कथारूप के साथ–साथ राम एवं ि"ाव समबन्धी स्त्रोतों की रचना करके कथा–"ौली एवं स्त्रोत–"ौली का भी समन्वय किया है, जिसमें पौराणिक एवं ऐतिहासिक भौली का भी समन्वय दृश्टिगोचर होता है।''

(घ) छन्दविधान में समन्वय– गोस्वामीजी ने छन्द–विधान की दृश्टि से भी अपने काव्य में समन्वय की उद्भावना की। तुलसीदास न े अपनी रचनाओ ं में वर्णिक और मात्रिक छन्दों का प्रयोग करके छन्द सम्बन्धी समन्वय को स्थान दिया है।

(ङ) अलकं ार योजना में समन्वय– तुलसीदास ने अपने काव्य में के"ाव की तरह अलंकारों को साध्य नहीं बनाया था, वे उनके लिए साधन थे। उनकी काव्य कला मे अलकंार अपने आप आ गये हैं, उन्हें अन्य कवियों की भाँति ढूँढने का प्रयत्न नहीं करना पड़ा। उस समय प्रचलित सभी अलकारा को अपने काव्य में स्थान देकर तुलसी ने अलंकार"ाास्त्र में समन्वय किया है।

(च) कथा में समन्वय–तुलसी ने 'रामचरितमानस' की रचना करके कथा के स्रोतों में समन्वय स्थापित किया। उन्होनें विभिन्न ग्रन्थों से राम–कथा को लेकर ऐसे सुन्दर कथा–सम्बन्धी समन्वय की स्थापना की है, जिससे 'निगमागम–सम्मत' होकर भी 'रामचरितमानस' संबंधी अद्भुत, अलौकिक एवं मौलिक दिखाई दतेा है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, Month 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

(12) मानव संस्कृति में समन्वय – तुलसी के समस्त साहित्य का अध्ययन करने के प''चात् विचारक कहते हैं कि वि''व में जितने भी मानव हैं उनकी जितनी संस्कृतियाँ और सभ्यताएँ हैं, उन सबका सुन्दर समन्वय एकमात्र हिन्दुओं का ग्रन्थ 'रामचरितमानस' है जिसमें सब कुछ अध्ययन किया जा सकता है। डा0 उदयभानु सिंह का कहना है –''तुलसी-साहित्य मे ं पाँच भिन्न जातियों के पात्रों का चित्रण है-देव, दानव, नर, वानर और किन्नर, उनकी अपनी संस्कृति है।'' इनके अतिरिक्त तुलसी ने हिन्दू संस्कृति के साथ मुस्लिम संस्कृति का समन्वय भी स्थापित किया है। तुलसी की समस्त जीवन-साधना समन्वय की चेष्टा है। वे सब कुछ ग्रहण करके उसे नवीन और उपयोगी रूप दने के पक्षपाती हैं। मर्यादा और संयम की साधना में गोस्वामी जी संसार के सर्वश्रेश्ठ कवि हैं। एक फ्रेचं आलोचक ने श्रेश्ठ कवि के तीन गुण बताये हैं-समन्वय, अनुमति की सत्यता और स्पश्टता। इन तीनों गुणों का समन्वय प्रचुर मात्रा में गोस्वमी तुलसीदास जी के काव्य से प्राप्त होता है।

(13) राम-काव्यधारा और कृश्ण-काव्यधारा में समन्वय –तुलसीदास के साहित्य मेएक नहीं, अनके वस्तुएँ ऐसी अद्भुत मिलती हैं, जिनकी समन्वय करके उन्होनं े संसार का बड़ा उपकार किया है। इसका प्रमाण इस बात से मिलता है कि तुलसी स्वयं राम-काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि थे, फिर भी कृश्ण के चरित्र का वर्णन लेकर उन्होनें श्रीकृश्ण गीतावली' की रचना की है।

उपसंहार – संक्षेप में तुलसी का समस्त जीवन और काव्य समन्वय का ही रूप है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के भाब्दों में कह सकते हैं–'' उनका सारा काव्य समन्वय की विराट् चेश्टा है। लोक और भास्त्र का समन्वय, गार्हस्थ और वैराग्य का समन्वय, भक्ति और ज्ञान का समन्वय, भाशा और संस्कृति का समन्वय, निर्गुण और सगुण का समन्वय, कला और तत्व-ज्ञान का समन्वय, पांडित्य और अपांडित्य का समन्वय..... 'रामचरितमानस' प्रारम्भ से लेकर अन्त तक समन्वय का काव्य है।